अणुविभा जयपुर केन्द्र,

आचार्य तुलसी मार्ग, (गौरव टॉवर के सामने) मालवीय नगर, जयपुर-17

फोन : 91-141 **2724490**,

प्रेस विज्ञप्ति

''आचार निष्ठा, संघ निष्ठा और बोद्धिक क्षमता के धनी युवाचार्य महाश्रमण''

मुनिश्रीविनयकुमारजी 'आलोक'

जयपुर, 03 सितम्बर 09

शासन करने की दो पद्वत्तियां है एकतन्त्र और लोकतन्त्र। एकतन्त्र में एकात्मक शासन होता है और लोकतन्त्र में जनता का। तेरापंथ में दोनों ही प्रणलिया है एकतन्त्र भी है और लोकतन्त्र भी। प्रश्न खड़ा होता है एकतन्त्र में लोकतन्त्र कैसे? और लोकतन्त्र में एकतन्त्र कैसे? देखने में दोनों मार्ग भिन्न-भिन्न है। तेरापंथ प्रणेता आचार्यश्री भिक्षु ने एकतन्त्र में लोकतन्त्र को स्थपित किया। इसका जीता जागता प्रमाण है जब-जब भी आचार्य भिक्षु ने मर्यादा का आलेखन किया तब सभी साधु-साध्वियों को रजामन्द किया, मर्यादाएं थोपी नहीं गई यह है एकतन्त्र में लोकतन्त्र का उत्कृश्ठ रूप वर्तमान दौर में भी यही व्यवस्था संघ में लागू है। आचार्य सम्पन होते हुए भी आचार्य विचार विमर्श के बाद निर्णय लेते हैं, इसमें न आचार्य के विचारों का हनन होता है और न ही साधु-साध्विंयो के। आचर्य अपने उत्तराधिकारी के चयन में स्वतन्त्र है वे ही अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति करते है तेरापंथ धर्म संघ के दशम आाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य महाश्रमण की नियुक्ति की। ये :ाब्द मुनिश्री विनयकुमारजी 'आलोक' ने युवाचार्य चयन दिवस के उपलक्ष में अणुविभा केन्द्र मालवीय नगर में समायोजित विशाल सभा को सम्बोधिक करते हुए कहे।

मुनिश्री ने प्रश्न उपस्थित करते हुए कहा - नियुक्ति का मापदण्ड क्या? सात सौ साधु-साध्वियों के परिवार में अनेकानेक साधु-साध्वियां युवाचार्य बनने की योग्यता रखते है फिर एक का निर्णय आचार्य कैसे करते है? मुनिश्री ने समाधान करते हुए कहा युवाचार्य नियुक्ति के लिए तीन सूत्र प्रमुख माने जा सकते है आचार निश्ठा, संघनिश्ठा, बौद्धिक क्षमता, इन तीनों का समन्वय ही नियुक्ति का आधार है। बौद्धिक क्षमता हो आचार निश्ठा है और संघ निश्ठा नहीं हैं, संघ निश्ठा है और बौद्धिक बल नहीं है तो संघ गतिमान और ऊर्जाशील नहीं रह सकता। युवाचार्य महाश्रमण तीनों निश्ठाओं में खरे उतरते है।

मुनिश्री ने आगे कहा - महाश्रमण जी सत्य के अन्वेशक है और वे हमेशा सत्य की खोज में सलग्न रहते है। सत्य की उपलब्धि ही साधक की महत्वपूर्ण उपलब्धि है सत्य हमेशा बहते पानी की तरह निर्मल होता है। वहीं सत्य स्थित ठहरता है। युवाचार्यश्री महाश्रमण निर्मलता के धनी है। बौद्धिक क्षमता, अनुशासन करने के योग्यता भाशा समिति का उपयोग युवाचार्यश्री महाश्रमण की विशेशताएं है।

तेरापंथ महिला मंडल की राश्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सौभाग बैद ने कहाः- भारतीय परम्परा में गुरू का सर्वोपरि स्थान है और तेरापंथ में कहा जा सकता है महासर्वोपरी। मुनिश्री गिरीश कुमारजी के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

अणुविभा केन्द्र, जयपुर